A Pratibha Spandan Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 02, July-December, 2025

हाटी क्षेत्र में लिम्बर गायन की परंपरा: ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और धार्मिक अध्ययन

Mrs. Monika Kumari[1], Dr. Purvi Luniyal[2]

1 Assistant Professor and Research Scholar, Eternal University, Baru Sahib
2 Dean and Professor, Eternal University, Baru Sahib

OPEN ACCESS

सारांश

लिम्बर गायन हिमाचल प्रदेश के जिला सिरमौर के हाटी क्षेत्र की एक प्राचीन दैविक परंपरा है जो मुख्यतः देवी-देवताओं की शांत (पूजा) में विशेष लय एवं ताल के साथ प्रस्तुत की जाती है। इसका संबंध न केवल भक्ति और सांस्कृतिक पहचान से है, बल्कि युद्धकालीन प्रेरणा, वीरगाथाओं के संरक्षण और सामुदायिक एकता से भी जुड़ा है। इस शोध में लिम्बर गायन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, महाभारत से जुड़ी कथाएँ, शिरगुल महाराज की वीरता की कथा, युद्ध देवी (जिसे स्थानीय भाषा में ठारी के नाम से जाना जाता है) की आराधना की सांस्कृतिक शक्ति का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

मुख्य शब्द: *लिम्बर गायन, हाटी क्षेत्र, शिरगुल महाराज, युद्ध देवी, लोककथा, दैविक परंपरा*

प्रस्तावना

वर्तमान में लिम्बर गायन दैविक परंपरा में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह गायन देवताओं की शांत में लिम्बर ताल के साथ गाया जाता है। हाटी क्षेत्र में प्रमुख देवी-देवताओं में शिरगुल महाराज, बिजट महाराज, महासू देवता, माँ भंगायणी, माँ काली, और गुगा महाराज शामिल हैं। आज भी लिम्बर गायन स्थानीय देवी-देवताओं की शांत के अवसर पर गाया जाता है और इसमें क्षेत्र की सुख-समृद्धि तथा विपत्तियों से रक्षा की प्रार्थना की जाती है।

लिम्बर गायन का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

उत्पत्ति और महाभारत प्रसंग

हाटी क्षेत्र के लोग स्वयं को कौरव (शाटी) और पांडव (पाशी) के वंशज मानते हैं, और इस आधार पर अपनी सांस्कृतिक जड़ों को महाभारत काल से जोड़ते हैं। जनश्रुति के अनुसार, लिम्बर की शुरुआत महाभारत काल में हुई थी। इसका मुख्य उद्देश्य देवी-देवताओं को प्रसन्न कर विजय का आशीर्वाद प्राप्त करना था। परंपरा के अनुसार, लिम्बर गायन की शुरुआत महाभारत के प्रसंगों के गायन से होती है, उसके बाद ही विशेष लिम्बर ताल में मुख्य गान आरंभ होता है।

पहला प्रसंग

कौरू पांडू भाईयो भाई

कुन्ता थोई गांधारी दुईए बिआई।

पांच पूत थिए कुन्ति देऊती रे जाई।

शौ पूत थिया गांधारी रा जाई।

तुंए बुलो पाशे खेलो थिए होतनापूरी।

पांण्डे री ताईए गोलती जाई।

होतनापुरी बोसो थिया कोरू पांडू रा गाँव।

जोदी पोडा थिया कूरूक्षेत्रों जूदो, तोदी छाड़ा थीया पांडूए लिम्बरो नाँव।

दूसरा प्रसंग

कौरू पांडू खेलों ले जूआ, कोपटी नारिणा कोइका गुआ।

तोबे छुटी नारणा तान्दू संसारी, कौरू जीताई गुआ पांडू गुआ हारी।

पांडू राजाओं के हुआ बनबासो, कौरूए दिता तोबे देशोई दण्डों।

बारो बोशो पांडूए वन बुलो खाई, तीन्दु बी गोन्दारिए बिश दितू पाई।

कुन्ता के हाथो ओमरित जाई।

भावार्थ: इन प्रसंगों में कौरव और पांडव की उत्पत्ति, जुए का खेल, पांडवों का वनवास और कठिनाइयों का वर्णन है।

शिरगुल महाराज का लिम्बर गान

देवता का परिचय

शिरगुल महाराज का प्रभाव सिरमौर, शिमला और उत्तराखंड तक फैला है। उनके मंदिर अनेक स्थानों पर स्थित हैं। उनका लिम्बर, दैविक शक्ति और वीरता का अद्वितीय उदाहरण है।

शिरगुल का लिम्बर

लिम्बर के बोल-

चार धुरो (होउ होउ-कोरस) पोण पाणी-(होउ होउ-कोरस)

राजा भूकडू, दुदमा राणी।। ईशरे नारणे, धोरती चाणी।।

लिए रिंगे, चुड़ चुखट।। मिहे टिम्बे, तुरे देवा।।

दिल्ली देवे, खाण्ड़ो तेरू।। दिल्ली देवे, दिति मार।।

दानो मारे, लाखो हजार।।

दिल्ली देवे, खेले खेल।। दानो मारे, सिहों टेल।।

दिल्ली देवे, दिति धूम।। दानो मारे, राकसो मारे।।

टेके हुम, तोदी हेरी।। देखण धोर, तोदी भेटी।।

सुईणे चुड़, -- ।। डुँगे रखा, नालो दा।।

असुरे आई, झेठ छाड़ी।। असुरे ऊबी, चुड़ी के लाई।।

तेथे दु, असुरो चुड़ी।। पहुँचा जाए, शिरगुलो।।

ईरे ड़ेऊठी, भितरा जाए।। पूजा लाई, शिरगुलो।।

बाईरी फिरकाई, तेथु बे।। असुरो, आगड़े जाए।।

भोड़ तेसी, चुरू खे।।

घेर छाड़ा पाए, टावरा लिया।। चोरू रा टाबरा लिया।।

ढ़ाको दा पाई, झोपटी पाई।। मुंजी दिल्ली, पिपले लाई।।

भानजे तेरे, सेहने सुले।। उबी ऊंचाई, उबे उचायो।।

बान्चनी लाई, बान्ची बुन्ची।। कागली, जेबो पाई।।

तू रे मामिया, चुड़ी खे आई।। चुड़ तेरी, असुरे खाई।।

भूखा होईला, भूखा ही आए।। जुठा होईला, जुठा ई आए।।

तोदी उपाई, हाथो मलियो।। शावी घोड़ी, छमाटिए लाई।।

छिटकी घोड़ी, शादड़ आई।। शादड़ो वानिए, पाड़ा हाला।।

राई के राणे, समझी पाई।। चुड़ी का राई, चुड़ी खे चाला।।

भेटो मिलो, शड़की आई।। सुने सरफी, भेटा पाई।।

राई के राने, किया भोज।। बाईरो बाकरे, कशणी लाई।।

शांई घोड़ी, छमाटिए लाई।। शांई घोड़ी, पांक्टे आई।।

छिटकी घोड़ी, पोडी धुम।। पांवटे दुणी, देखी श्रीदुण।।

एकिए जेठे, शांई घोड़ी।। छमाविए लाई, छिटकी घोड़ी।।

शावगे आई, भाईया बुलु।। छब्दा शिर, चुड़ी खे चाल।।

चूड़ मेरी, असुरे खाई।। बुलदा लागा, छब्दाशिर भाई।।

चुड़ी खे भाईया,बोलु ने आई।। जीरी झिझणी, शावगे की।।

बोलु खाई, काटू फाफरा।। चुड़ी का, बोलु ने खाए।।

बातों शुणियो, बड़ी खाटी।। शरूए बिजे, ढाली ढाको।।

लियो युई, शावगे आटी।। रुन्दी लागी, दुदमा माई।।

आटी ने बेठिया, जल्मो ढाई।। बान्दा भोल, काण्छा भाई।।

माते दुदमे, आई बुरी।। कान्छे भाई खे, गवा झूरी।।

शांई पुड़ी, छमादिए लाई।। माता दुदमा, साथिए आई।।

छिटकी घुड़ी, ऊंची आईणी।। माता दुदमा, शोरपी पाई।।

शांई घुड़ी, छमादिए लाई।। छिटकी पुदी, चुड़ी से आई।।

काले बागो, शोरपी पाई।। शिरगुल गोवा, चुडी से जाई।।

चुड़ी दु, असुरे पाई।। डेऊणों ठाई, शोरूए भीजे।।

खेदणा लाई, जोबे असुरे।। हेउणो ठाई, आगे असुरो।।

पाछे शिरगुलो, चूडी रा राई।। दानो असुरो, नोइटे जाए।।

शरूए बीजे, खेदणा लाई।। तेने असुरे, ड़ेउणो ठाई।।

आगे असुरो, पाछे चूड़ी रा राई।। नोइटे असुरो, पोड़ा ओल।।

ओले पोड़दे, खाण्डणीये पाई।। भुंजी धारे, पोडी कार।।

दानो भागा, तोउसो पार।। असुर भागा, गालु बीज।।[1]

1 श्री अजय छिंटा, (साक्षात्कार स्वयं शोधार्थी द्वारा लिया गया), गाँव: भाटना, डाकघर व तहसील कुपवी, जिला: शिमला, हि॰ प्र॰, दिनांक: 27-01-2024

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 02, July-December, 2025

भावार्थ: राजा भुकडू और दूदमा रानी की जय जयकार के साथ लिम्बर गायन आरम्भ किया जाता है। यह शिरगुल देवता की वीरता की कथा का गायन है। शिरगुल देवता दानवों का संहार करने स्वयं दिल्ली गए तथा अपनी दो धारी तलवार से लाखों दानवों का संहार कर कई करतब किए। एक दिन जब शिरगुल देवता हवन ग्रहण करने के उपरान्त उन्हें स्वप्न में चूड़धार क्षेत्र में असुर दानव द्वारा अपमानजनक कृत्यों जैसे मन्दिर से शिरगुल की पूजा का सामान बाहर फेंक मन्दिर को अपवित्र करना शिरगुल देवता के सेवक भोड़ व चूरू के परिवार को एक ऊँची शिला पर घेरना आदि का आभास हुआ। शिरगुल के भान ने दैविक शक्तियों से संदेश दिल्ली शिरगुल महाराज तक पहुँचाया। शिरगुल महाराज ने संकट का संदेश पाते ही सांवी घोड़ी को पैदा कर चूड़धार को चल दिया। शिरगुल महाराज छब्दा शिर के निवास स्थान शावगे पहुँचा और चूड़धार चलने को कहा। छब्दा शिर ने सोने की अशफी भेंट में दी और कहा कि वह शावगे को छोड़ नहीं सकता और चूड़धार का काढ़ू फाफरा नहीं खा सकता। उसकी बातें सुन कर शिरगुल को गुस्सा आ गया औऱ उन्होने शावगे पर दैव्य ओले बरसाने शुरू किए। माता दुदमा के यह कहने पर शिरगुल का गुस्सा ठण्डा हुआ। शिरगुल देवता ने चूड़धार पहुँचकर शोरु (ओलो) की वर्षा कर असुर को खदेड़ दिया। अंतत: 'ओल' नामक गाँव में शिरगुल ने तलवार का वार किया लेकिन दानव भाग कर तौंस नदी के पार गया। तौस को लांघते हुए शिरगुल देवता ने असुर पर बिजली गिराकर उसे मौत के घाट उतार दिया।

हाटी क्षेत्र में देवी के लिम्बर गान की परंपरा

महाभारत काल से प्रेरित यह परंपरा हाटी क्षेत्र में युद्ध देवी (ठारी देवी) की स्थापना और पूजा के रूप में विकसित हुई। देवी का स्थान अत्यंत गोपनीय रखा जाता था, और युद्ध से पहले विजय प्राप्ति के लिए देवी का आशीर्वाद पाने के लिए व सेना में दैवीय शक्तियों का संचार करने के लिए देवी का लिम्बर गाकर आह्वान करते थे।

देवी का लिम्बर

पोइली थाती कूणे हूमी, पोइली थाती रावणे हूमी।

केथे हुमी, लांके हुमी।

दूजी थाती कुणे हुमी, दूजी थाती रामे हुमी।

केथे हुमी, जोधिया हुमी।

चीजी थाती कुणे हुमी, चीजी थाती पांडवे हुमी।

केथे हुमी, हस्तिनापूरी हुमी।

चौथी थाती कुणे हुमी, चौथी थाती शिरगुले हुमी।

केथे हुमी, टिम्बरी चूड़ो।

भावार्थ: यह गीत बताता है कि देवी के पूजा स्थल की स्थापना सर्वप्रथम रावण ने लंका में, फिर श्रीराम ने अयोध्या में, फिर पांडवों ने हस्तिनापुर में, और अंततः शिरगुल महाराज ने टिम्बरी चूड़ नामक स्थान पर की थी।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में लिम्बर गायन का महत्व

वर्तमान समय में भी लिम्बर गायन हाटी क्षेत्र की दैविक और सांस्कृतिक परंपरा में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। देवताओं के सम्मान में आयोजित धार्मिक अनुष्ठानों, मेले-त्योहारों और उत्सवों के अवसर पर लिम्बर गायन अनिवार्य अंग माना जाता है। आज भी, जब भी स्थानीय देवी-देवताओं की शांत (पूजन) आयोजित होती है, स्थानीय लोग सामूहिक रूप से लिम्बर ताल में भक्ति-गीत प्रस्तुत करते हैं। गीतों की पंक्तियों में क्षेत्र की सुख-समृद्धि, वर्षा की अनुकंपा, कृषि की उन्नति तथा बीमारियों, आपदाओं और विपत्तियों से रक्षा की प्रार्थना की जाती है। लिम्बर गायन केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि सामाजिक एकता और सामूहिक स्मृति का प्रतीक भी है। इसमें सम्मिलित होने वाले लोग—चाहे वे गायक हों, वादक हों या श्रोता—सभी स्वयं को उस देवत्व और सामूहिक ऊर्जा से जुड़ा हुआ अनुभव करते हैं, जो पीढ़ियों से इस परंपरा में प्रवाहित हो रही है।

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 02, July-December, 2025

निष्कर्ष

लिम्बर गायन हाटी क्षेत्र की दैविक सांस्कृतिक धरोहर है। यह गायन न केवल इस क्षेत्र के धार्मिक और भक्ति भावना को अभिव्यक्त करता है, बल्कि वीरता, सामूहिक स्मृति और सामाजिक एकता का भी प्रतीक है। लिम्बर गायन स्थानीय दैविक संस्कृति का इतिहास, लोककथाएँ और आध्यात्मिक शक्ति का अद्भुत संगम है, जो आज भी भाटी समुदाय के सांस्कृतिक जीवन का अभिन्न अंग है।

संदर्भ

हाटी क्षेत्र की मौखिक परंपराएँ एवं लोककथाएँ (स्थानीय बुजुर्गों के साक्षात्कार)।
क्षेत्रीय लोकगायकों से प्राप्त लिम्बर गायन के मौलिक संस्करण।